जलन

द्वारा लिखित डॉ. श्रीमती इन्दु लाल
गुरुवार, 11 अक्टूबर 2007 18:20 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:23

विवेचना : -

जलन ऐसी दुर्भावना है जो दूसरों की सफलता, उपलब्धियों, योग्यताओं या अन्य बेहतर स्थिति देखकर उत्पन्न होती है। यह घातक इसलिए है क्योंकि इसमें व्यक्ति के हृदय से परमेश्वर तथा अन्य मनुष्यों के प्रति प्रेम, आदर और सहभागिता खत्म हो जाती है। वह दूसरों का भला सोचने के बदले बुरा ही सोचता है। वह न सिर्फ़ दूसरों के लिए समस्या उत्पन्न करने का प्रयास करता है किन्तु स्वयं ही ऐसी कुढ़न और अशान्ति में अपना विनाश कर लेता है।

जलन की दुर्भावना को कैसे पहचानें ?

1. जब व्यक्ति के हृदय में उनके प्रति क्रोध और शत्रुता पनपे जिन्होंने उसका कभी कुछ बुरा नहीं किया : यदि लोगों की भलाई एवं सद्व्यवहार के बदले व्यक्ति के हृदय में उनके प्रति धन्यवाद तथा कृतज्ञता के बदले हमेशा क्रोध एवं बुराई ही पनपती है, तब यह जलन की ही दुर्भावना है।

उदाहरण : युसुफ के भाइयों की उसके प्रति जलन –

‘‘और इस्राएल अपने सब पुत्रों से बढ़के यूसुफ के प्रीति रखता था : और उस ने उसके लिये रंगबिरंगा अंगरखा बनवाया। सो जब उसके भाइयों ने देखा, कि हमारा पिता हम सब भाइयों से अधिक उसी से प्रीति रखता है, तब वे उस से बैर करने लगे और उसके साथ ठीक तौर से बात भी नहीं करते थे।’’

1 / 13

जलन

द्वारा लिखित डॉ. श्रीमती इन्दु लाल
गुरुवार, 11 अक्टूबर 2007 18:20 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:23

(उत्पत्ति 37:3-4)

2. जब व्यक्ति के हृदय में दूसरों की भलाई के बदले बुराई ही उत्पन्न हो और वह उनका अहित करने की सोचे :

उदाहरण : प्रभु यीशु मसीह के प्रति लोगों की ईर्ष्या –

“क्योंकि वह जानता था कि उन्होंने उसे डाह से पकड़वाया है।” (मत्ती 27:18)

3. जब व्यक्ति के हृदय में हर बंधन तोड़कर और हर सीमा पार कर, दूसरे व्यक्ति को समाप्त कर देने की तीव्र इच्छा हो :

उदाहरण : कैन की हाबिल के प्रति ईर्ष्या –

2 / 13

द्वारा लिखित डॉ. श्रीमती इन्दु लाल
गुरुवार, 11 अक्टूबर 2007 18:20 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:23

‘‘कुछ दिनों के पश्चात कैन यहोवा के पास भूमि की उपज में से कुछ भेंट ले आया। और हाबिल भी अपनी भेड़-बकरियों के कई एक पहिलौठे बच्चे भेंट चढ़ाने ले आया और उनकी चर्बी भेंट चढ़ाई
;
तब यहोवा ने हाबिल और उसकी भेंट को तो ग्रहण किया
,
परन्तु कैन और उसकी भेंट को उस ने ग्रहण न किया। तब कैन अति क्रोधित हुआ
,
और उसके मुंह पर उदासी छा गई। तब यहोवा ने कैन से कहा
,
तू क्यों क्रोधित हुआ
?
और तेरे मुंह पर उदासी क्यों छा गई है
?
यदि तू भला करे तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी
?
और यदि तू भला न करे
,
तो पाप द्वार पर छिपा रहता है
,
और उसकी लालसा तेरी ओर होगी
,
और तू उस पर प्रभुता करेगा। तब कैन ने अपने भाई हाबिल से कुछ कहा
;
और जब वे मैदान में थे
,
तब कैन ने अपने भाई हाबिल पर चढ़कर उसे घात किया।
’’
(
उत्पत्ति
4:3-8)

4. □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ :□□

उदाहरण 1 : पलिश्तियों की इसहाक के प्रति ईर्ष्या –

"फिर इसहाक ने उस देश में जोता बोया, और उसी वर्ष में सौ गुणा फल पाया : और यहोवा ने उसको आशीष दी। और वह बढ़ा, और उसकी उन्नति होती चली गई , यहां तक कि वह अति महान पुरूष हो गया। जब उसके भेड़ - बकरी , गाय - बैल , और बहुस दास - दासियों हुई , तब पलिश्ती उस से डाह करने लगे। "

(उत्पत्ति 26:12-14)

उदाहरण 2 : दानियेल की सफलता के कारण राजदरबारियों की ईर्ष्या –

"जब यह देखा गया कि दानियेल में उत्तम आत्मा रहता है, तब उसको उन अध्यक्षों और अधपतियों से अधिक प्रतिष्ठा मिली; वरन राजा यह भी सोचता था कि उसको सारे राज्य के ऊपर ठहराऊं। तब अध्यक्ष और अधपति राजकार्य के विषय में दानियेल के विरूद्ध दोष ढूंढ़ने लगे ; परन्तु वह विश्वासयोग्य था , और उसके काम में कोई भूल वा दोष न निकला , और वे ऐसा कोई अपराध वा दोष न पा सके। तब वे लोग कहने लगे , हम इस दानियेल के परमेश्वर की व्यवस्था को छोड़ , और किसी विषय में उसके विरूद्ध कोई दोष न पा सकेंगे।

”

(
दानयि्येल
6:3-5)

5.

उदाहरण 1. उड़ाऊ पुत्र के बड़े भाई की ईर्ष्या –

“उसने पति‍ा को उत्तर दयि‍ा, कि देख; मैं इतने वर्ष से तेरी सेवा कर रहा हूं, और कभी भी तेरी आज्ञा नहीं टाली, तौभी तू ने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दयि‍ा , कि मैं अपने मति्रों के साथ आनन्द करता
”

(
लूका
15:29)

उदाहरण 2. दाख की बारी के मजदूरों की ईर्ष्या –

''कि इन पछिलों ने एक ही घंटा काम किया, और तू ने उन्हें हमारे बराबर कर दयिा, जनि्होंने दनि भर का भार उठाया और घाम सहा।'' (मत्ती 20:12)

6. [illegible] –

उदाहरण 1. दाऊद की प्रशंसा सुनकर शाऊल की ईर्ष्या –

''और वे स्त्रियां नाचती हुई एक दूसरी के साथ यह गाती गई कि शाऊल ने तो हज़ारों को, परन्तु दाऊद ने लाखों को मारा है। तब शाऊल अतिक्रोधति हुआ, और यह बात उसको बुरी लगी; और वह कहने लगा, उन्होंने दाऊद के लयि तो लाखों और मेरे लयि हज़ारों ही ठहराया; इसलयि अब राज्य को छोड़ उसको अब क्या मलिना बाकी है।'' (शमूएल 18:7-8)

उदाहरण 2. पौलुस के प्रति यहूदियों की ईर्ष्या –

"परन्तु यहूदी भीड़ को देखकर डाह से भर गए, और निन्दा करते हुए पौलुस की बातों के विरोध में बोलने लगे।" (प्रेरितों के काम 13:45)

"उन में से कितनों ने, और भक्त यूनानियों में से बहुतेरों ने और बहुत सी कुलीन स्त्रियों ने मान लिया और पौलुस और सीलास के साथ मिल गए, पर न्तु यहूदियों ने डाह से भरकर बाज़ारू लोगों में से कई दुष्ट मनुष्यों को अपने साथ में लिया

,
और भीड़ लगाकर नगर में हुल्लड़ मचाने लगे

,
और यासोन के घर पर चढ़ाई करके उन्हें लोगों के सामने लाना चाहा
"

(
प्रेरितों के काम
17:4-5)

□□□ □□ □□□□□□□□–

1. □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□: □□

उदाहरण : युसुफ के भाई (उत्पत्ति 37:11-36)।

उन्होंने अपने ही छोटे भाई से बैर किया। वे उससे ठीक से बात नहीं करते थे। वे उसे मार डालना चाहते थे। उन्होंने उसे सूखे कुएं में डाल दिया।

जलन

द्वारा लिखित डॉ. श्रीमती इन्दु लाल
गुरुवार, 11 अक्टूबर 2007 18:20 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:23

फिर गुलामों की तरह उसे बेच दिया। पिता से झूठ बोला और जीवन भर के आत्मग्लानि में जलते रहे।

2. इससे व्यक्ति में असुरक्षा तथा हीनता की भावना पनपती है :

उदाहरण : शाऊल की दाऊद के प्रति ईर्ष्या (1 शमूएल 18:28-30; 19:1)।

3. इससे व्यक्ति के जीवन से शान्ति तथा संतुष्टि जाती रहती है :

उदाहरण : शाऊल राजा (1 शमूएल 16:14)।

4. इससे व्यक्ति जो कुछ दूसरों के पास है उसे किसी भी प्रकार प्राप्त करने की लालसा करता है। हमेशा उसे कुछ और प्राप्त करने की चाहत बनी रहती है

8 / 13

उदाहरण : अहाब राजा की नाबोत की बारी प्राप्त करने की लालसा (1 राजा 21:5-6)

5. **:**

''जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है''

(1 यूहन्ना 4:8)

''यदि कोई कहे, कि मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूं; और अपने भाई से बैर रखे; तो वह झूठा है : क्योंकि जो अपने भाई से, जिसे उस ने देखा है, प्रेम नहीं रखता
,
तो वह परमेश्वर से भी जिसे उस ने नहीं देखा
,
प्रेम नहीं रख सकता
''

(1
यूहन्ना
4:20)

''यीशु ने उन से कहा; यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होगा, तो मुझ से प्रेम रखते; क्योंकि मैं परमेश्वर में से निकल कर आया हूं; मैं आप से नहीं आया , परन्तु
उसी ने मुझे भेजा तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते
?

इसलिये कि मेरा वचन सुन नहीं सकते। तुम अपने पिता शैतान से हो
,
और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है
,
और सत्य पर स्थिर न रहा
,
क्योंकि सत्य उस में है ही नहीं
:
जब वह झूठ बोलता
,
तो अपने स्वभाव ही से बोलता है
;
क्योंकि वह झूठा है
,
वरन झूठ का पिता है।
''
(
यूहन्ना
8:42-44)

6. □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□,□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □:□

''क्रोध तो क्रूर, और प्रकोप धारा के समान होता है।'' (नीतिवचन 27:4)

''शान्त मन, तन का जीवन है, परन्तु मन के जलने से हड्डियां भी जल जाती है।'' (नीतिवचन 14:30)

जलन

द्वारा लिखित डॉ. श्रीमती इन्दु लाल

गुरुवार, 11 अक्तूबर 2007 18:20 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:23

“और जब उन्होंने परमेश्वर को पहिचानना न चाहा, इसलिये परमेश्वर ने भी उन्हें उन के निकम्मे मन पर छोड़ दिया; कि वे अनुचित काम करें। सो वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, और लोभ, और बैरभाव से भर गए; ओर डाह, और हत्या और झगड़े, और छल, और ईर्ष्या से भरपूर हो गए।” (रोमियों 1:28-29)

जलन की दुर्भावना दूर कैसे करें ?

1. उचित चिंतन : नकारात्मक चिंतन ईर्ष्या को और हवा देते हैं। अपना ध्यान रचनात्मक बातों की ओर लगाने के द्वारा ईर्ष्या की दुर्भावना से बच सकते हैं।

“निदान, हे भाइयों, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और

11 / 13

द्वारा लखिति डॉ. श्रीमती इन्□दु लाल
गुरुवार, 11 अक्तूबर 2007 18:20 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:23

जो जो बातें मनभावनी हैं
,
नदिान
,
जो जो सद्गुण और प्रशंसा की बातें हैं उन्□हीं पर ध्□यान लगाया करो□ जो बातें तुम ने मुझ से सीखीं
,
और ग्रहण की
,
और सुनीं
,
और मुझ में देखीं
,
उन्□हीं का पालन किया करो
,
तब परमेश्□वर जो शान्ति का सोता है तुम्□हारे साथ रहेगा□
''
(
फलिप्पियों
4:8-9)

2. □□□□□ □□□□□□□□□: □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□-□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□

3. □□□□□ □□□□□□□□□□□□: □ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□,□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□

4. □□□□□ □□□□□□□□□□□□□: प्रार्थना के द्वारा परमेश्□वर की सामर्थ्□य से हम इस दुर्भावना से बच सकते हैं□